सामाजिक परिवर्तन हेतु शिक्षा

शिक्षा विविध उपायों तथा प्रभावों से सामाजिक परिवर्तन लाती है तथा सामाजिक परिवर्तन की गति तीव्र करती है। हमारे सामने उदाहरण भी है कि कुछ सामाजिक ने प्रमुख रूप से पुरानी - आडम्बर-पूर्ण सामाजिक प्रथाओं की कुण्डली को तोड़कर अपना आधुनिकीकरण किया और विश्व के उन्नत समाजों में प्रमुख स्थान प्राप्त किया। यदि कोई समाज शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाना चाहता है तो उस समाज को यह सदैव ध्यान रखना होगा कि हर प्रकार की शिक्षा सामाजिक परिवर्तन नहीं ला सकती है। उस समाज को अपनी शिक्षा प्रणाली की भी पुनर्रचना करनी होगी और शिक्षा के यह रूप प्रदान करना होगा जिसमें वह सामाजिक परिवर्तन लाने में अधिक सक्षम हो सके। इस कार्य के लिए ऐसी शिक्षा-व्यवस्था की आवश्यकता है, जो सामान्यतः निम्न कार्य कर सके-

(1.) शाश्वत मूल्यों को स्थायी करने वाली ⇒

प्रत्येक समाज यह चाहता है कि समाज में जो भी परिवर्तन आये, उनके परिणामस्वरूप समाज उन्नत की ओर अग्रसर हो। परिवर्तनों के द्वारा समाज अवनति की ओर नहीं जाना चाहता है। परिवर्तन के द्वारा अवनति की ओर न चला जाए, इस सम्भावना को रोकने के लिए समाज को चाहिए कि वह ऐसी शिक्षा व्यवस्था का विकास करे जो समाज के शाश्वत मूल्यों को स्थायी कर सके। उदाहरण-के लिए भारत में ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है जो सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता जैसे शाश्वत गुणों को स्थायी कर सके।

(2.) उदारवादी प्रकृति ⇒

सामाजिक परिवर्तन की गति तीव्र करने के लिए उद्देश्य से जिस शिक्षा की व्यवस्था की जाय, वह ऐसी हो जो व्यक्तियों की विचारधाराओं से संकीर्णताओं को हटाकर

Scanned with CamScanner

उनके विचारों तथा दृष्टिकोणों में उदारता तथा व्यापकता ला सके। शिक्षा द्वारा ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करने की आवश्यकता है, जो नवीनता को स्वीकार कर सके तथा परिवर्तनों से भयभीत न हों।

(3.) परिवर्तन हेतु प्रेरक ⇒

समाज ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करें जो समाज को परिवर्तन करने हेतु प्रेरणा प्रदान करें। वह समाज को यह स्पष्ट कर सके कि परिवर्तन न केवल आवश्यक ही है अपितु कल्याणकारी व समाज के अस्तित्व के लिए आवश्यक भी है। ऐसी शिक्षा सामाजिक परिवर्तन जल्दी लाती है। जो समाज को परिवर्तन की आवश्यकता की अनुभूति करा सके। समाज जब परिवर्तन की आवश्यकता की अनुभूति कर लेता है, तो परिवर्तन लाना सहज व तीव्र हो जाता है।

(4) जन जागरण कर सके ⇒

वह शिक्षा-व्यवस्था सामाजिक परिवर्तन भली प्रकार ला सकती है, जो समाज में जनजागरण तथा नवचेतना का बिगुल बजाती है। यदि व्यक्ति जागरुक तथा चेतन है तो वे प्रयास करेंगे कि विश्व के अन्य समाज जिस ओर जा रहे हैं, वे भी अपने शाश्वत मूल्यों की रक्षा करते हुए उन्नति की उसी दिशा में अग्रसर हों। समाज के सदस्यों की जागरुकता उन्हें अन्य समाजों से पिछड़ने नहीं देती है।

(5.) सामाजिक मूल्यों की निर्मात्री ⇒

सामाजिक परिवर्तनों के लिए जो शिक्षा व्यवस्था की जाय वह ऐसी हो जो समाज की संस्कृति का परिमार्जन कर सके समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर कर सके तथा संस्कृति के उन मूल्यों को त्याग सके जो आज अपनी उपयोगिता खो चुके हैं। इतना ही नहीं शिक्षा ऐसी हो जो वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ के लिए नये-नये मूल्यों का निर्माण कर समाज को प्रदान कर सके।

Scanned with CamScanner

(6) वैज्ञानिक प्रगति का ज्ञान =>

समाज मे परिवर्तन लाने के लिए ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए। जो समाज के सदस्यों को विश्व में हो रहे वैज्ञानिक आविष्कारों खोजों तथा सत्यों का ज्ञान करा सके। इस ज्ञान के आधार पर व्यक्ति प्रथाओं को अपना सकेगें। उन्हें यह भी ज्ञात हो सकेगा कि समाज में झूठे और स्वार्थपरक आडम्बर कौन-कौन से हैं।

(7.) सामाजिक कार्यकर्त्ता का प्रशिक्षण =>

शिक्षा सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान कर परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करने वाली हो। ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है जो कुछ चुने व्यक्तियों की सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में प्रशिक्षित कर सके। इससे समाज को परिवर्तन लाने हेतु आवश्यक नेतृत्व का विकास करने वाली हो।

(8.) वांछनीय गुणों का विकास =>

सामाजिक परिवर्तन के लिए आवश्यक है कि समाज के व्यक्तियों मे कुछ विशिष्ट गुण हों, जो- उदारता, साहस, ग्रहणशीलता, विश्लेषण तर्क तथा चिन्तन शक्ति आदि। इसके अभाव में व्यक्ति परिवर्तनों को स्वीकार नहीं कर सकता है। उदाहरण के लिए, साहस के अभाव में डर के कारण किसी भी नवीनता को स्वीकार नही करेंगे। यदि उनमे ग्रहणशीलता नहीं है तब वे कुछ नवीन नही करेंगे। शिक्षा को चाहिए कि वह व्यक्तियों में इस प्रकार के भी आधारभूत गुणों का विकास करें।

Scanned with CamScanner